फिल्मी पटकथा से कम नहीं अमित दास की सफलता की दास्तां

✍ अमित कुमार

मोती बाबू इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (इनसेट में अमित दास)

"कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं होता, एक पत्थर तबियत से उछालो तो यारों"

दुष्यंत कुमार की यह चर्चित गजल अररिया जिले के नरपतगंज निवासी अमित दास पर बिल्कुल सटीक बैठता है। नरपतगंज के मृदौल ग्राम में जन्मे 35 वर्षीय अमित दास की सफलता की दास्तां किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं है। साधारण किसान परिवार में जन्मे अमित की प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा ग्रामीण स्कूल में बोरा–चप्ती पर बैठकर हुई। इसके उपरांत सुपौल जिला के वीरपुर से इन्होंने 9वीं तथा सहरसा जिला स्कूल से 1995 में मैट्रिक तक की तालिम हासिल करने के बाद पटना का रुख किया। जहां ए.एन. कॉलेज से 1997 में आई.एस.सी. की डिग्री हासिल की। स्नातक कला की डिग्री इन्होंने पत्राचार के माध्यम से अर्जित की। इस पिछड़े इलाके से अन्यत्र जाकर जब इंजीनियर बनने का सपना टूटा तो अमित ने पिता पर बोझ देना उचित न समझा। लिहाजा उनके मन में तरह–तरह के सवाल पनपने लगे। नौकरी तो करनी नहीं है। स्वंय अपना रोजगार करुंगा जिससे इस पिछड़े इलाके के हजारों लोगों के परिवारों की भी जीविका चल सके। उन दिनों अमित ने अपने पिता मोती बाबू से इजाजत ली और महज 250 रु. की शुरुआती पूंजी लेकर अपने सपनों को साकार करने दिल्ली चले गये। वहां कुछ लोगों ने कहा, कम्प्युटर सीख लो तीन–चार हजार कमा लोगे। नीट गये तो काउंसलर ने पूछा 'व्हेन डीड यू कम'। अमित अंग्रेजी में पूछे गये सवाल के किसी भी शब्द का मतलब नहीं समझ पाए। वहां कहा गया कि कम्प्युटर सीखना है तो पहले अंग्रेजी सीखो। लिहाजा अमित ने तीन महीने दिन–रात एक कर अंग्रेजी सीखी और पुनः नीट गये। जहां वे डिप्लोमा कोर्स कर ही रहे थे कि यू.के. से जॉब ऑफर आया लेकिन उन्होंने इसे ठुकरा दिया। कुछ अलग करने की चाह लिए अमित दास ने दिल्ली के भरत नगर इलाके में दस–बाई–दस के कमरे भाड़े पर लेकर दो सेकेंड हैंड कम्प्युटर खरीद कर अपना सॉफ्टवेयर बनाना शुरु किया। पहला ऑर्डर 5 हजार का मिला। आगे भी संघर्ष जारी रहा और ए.आर.पी. तकनीक विकसित की। यह तकनीक डॉटनेट पर आधारित थी। पुनः 8 लाख का ऑर्डर मिला। अमित दास की अप्रत्याशित मेहनत ने उन्हें सफलता के शीर्ष पर पहुंचा दिया।

पड़ोस का पान दुकानदार पूर्व की भांति अब भी पान ही बेच रहा था। जबकि अमित की डी.टी.सी. बस से शुरु हुई यात्रा मारुति–स्टीम, होंडा होते हुए अब मर्सिडीज तक पहुंच गयी है। बिहार के सबसे पिछड़े जिले अररिया में अमित दास ने विगत वर्ष 120 करोड़ की लागत से अररिया जिले के फारबिसगंज में इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना कर इतिहास के पन्नों में नई इबादत लिख दी। पूर्व में जहां छात्रों को इंजीनियरिंग जैसी रोजगारपरक तालिम हासिल करने हेतु घर से सैकड़ों कि.मी. दूर जाना पड़ता था, वहीं इस कॉलेज की स्थापना से यहां के सैकड़ों छात्र यहीं रहकर बेहतर शिक्षा ग्रहण कर रहें हैं। यही नहीं इस इलाके के सैकड़ों बेरोजगारों की बेरोजगारी इस कॉलेज के खुलने से दूर हुई है। यह कहना गलत न होगा कि जिस कार्य को यहां के बड़े–बड़े राजनेता नहीं कर पाये उस कार्य को यहां के सुदूर ग्रामीण इलाके के मध्यमवर्गीय किसान परिवार का एक होनहार युवा ने कर दिखाया।

एम.बी.आई.टी. के मालिक अमित दास का कहना है कि उनका मुख्य उद्देश्य इस इलाके के पिडछेपन को दूर कर इसे अंतरराष्ट्रीय पटल पर लाना है। यह तभी संभव है जब यहां बेहतर रोजगारपरक शैक्षणिक संस्था उपलब्ध हो। उन्होंने कहा कि इंजीनीयरिंग कॉलेज की स्थापना कर इस दिशा में एक शुरुआत की गयी है। जल्द ही मातृभूमि प्रोजेक्ट के तहत यहां मेडिकल कॉलेज, अन्तरराष्ट्रीय स्कूल समेत पूरा एजुकेशन हब स्थापित करने की योजना को अमलीजामा पहनाया जाएगा। अमित दास का नाम आज आस्ट्रेलिया के सफल उद्यमियों के नामों में शुमार है। सिडनी में आई. सॉफ्ट जैसी अन्तरराष्ट्रीय कंपनी की स्थापना इनकी सफलता की एक और कड़ी है। अस्ट्रेलिया के सिडनी में विगत कई सालों से रहने वाले अमित दास को आज भी रेणु माटी की सौंधी महक यहां खींच लाती है। यही कारण है कि वे साल में कम–से–कम दो–तीन माह अपने इस जन्मभूमि में गुजारते हैं तथा इस क्षेत्र के पिछड़ेपन को दूर करने का हर संभव प्रयास करते हैं। ❖❖❖